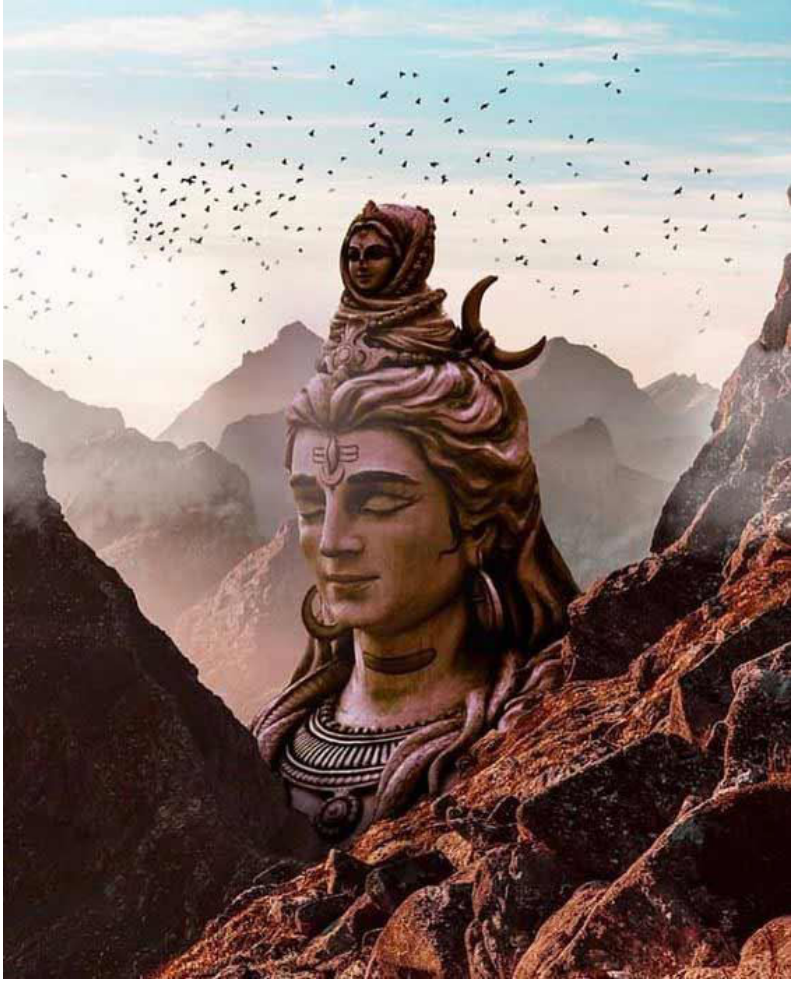


कौन थे शिव
?



स्वतन्त्र जैन जालन्धर 9855285970

अभिमत

धर्म क्या है, इस पर संवाद करना निरर्थक है,
आज जिस वातावरण में मनुष्य जीवन व्यतीत कर

रहा है, वैसी उसकी धारणा बन जाती है और वही उसका धर्म बन जाता है। धर्म धारण करने से पूर्व धर्म को समझना और फिर अपनाना ही सच्चा धर्म हो सकता है। सब धर्मों का मूल है मानवता, जिससे हम भटक चुके हैं। आज धर्म के नाम पर कलह-क्लेश बढ़ रहे हैं, समस्त संसार धर्म के नाम पर घातक हथियारों की होड़ में लगा हुआ है। किसी भी पीर-पैगम्बर ने हिंसा का उपदेश नहीं दिया, आज उनके ही शिष्य-प्रशिष्यों ने अपनी मानसिकता दिवालीयापन से उनके उपदेशों की गलत व्याख्या कर अपना उल्लू साधकर धर्म रक्षक कहलाते हैं। ऐसे कुतर्कों से दूर रहना ही धर्म है। परमश्रद्धेय श्री सामन्तभद्र जी महाराज का आभारी हूं, जिनकी मेरे पर अपार कृपा है और अपने व्यस्त समय पर इसका संशोधन किया।

स्वतन्त्र जैन जालन्धर 9855285970

कौन थे शिव ?

भारतवर्ष ऋषियों-मुनियों पैगम्बरों, तीर्थकरों एवं देवी-देवताओं का देश, जिसकी सभ्यता सनातन एवं श्रेष्ठ मानी जाती है। मुख्यतः ब्रह्मा, विष्णु और महेश वैष्णव एवं वैदिक और चौबीस तीर्थकर अर्हत (जैन) धर्म में मान्यता है। जैन धर्म में अरिहंत पद प्राप्त करने वाले केवलज्ञानी कहलाते हैं। वैदिक भाषा में ब्रह्मज्ञानी भी कहा जाता है। भारतीय सभ्यता सब सभ्यताओं से प्राचीन मानी जाती है, चाहे उसे वैदिक, वैष्णव, आर्य एवं सनातन सभ्यता कहें। वैदिक-ज्ञानी, वैष्णव-अहिंसावादी, सनातन-प्राचीन, आर्य-श्रेष्ठ सभ्यताएं कहलाती थीं। वेदों को प्राचीन माना जाता है, जो लगभग 5000-6000 वर्ष पूर्व ऋषि व्यास द्वारा लिखे गये। वेद का अर्थ होता है ज्ञान, ज्ञान तो बहुत प्राचीन था परन्तु ऋषि व्यास ने उन्हें लिपीबद्ध किया था। उस ज्ञान को चार भागों में बांटकर बनाए चार वेद - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। चारों वेदों में भगवान ऋषभदेव को वन्दना की गई है।

जैन दर्शन में शिव का अर्थ है कल्याण और शिव का विपरीत है वशि जिसका अर्थ है किसे के वश (अधीन) में नहीं, जो प्रकृति एवं संस्कृति की भोगों के वश में नहीं, वह है शिव जो आदिनाथ भगवान ऋषभदेव ही हैं जो समस्त संसार में भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा जाता है। अदिनाथ ने जीने की कला सिखाई, असि, मसि और कृषि जो शिव का त्रिशूल अंकित करती है। आदिनाथ ने तीन लोक जो जैन दर्शन का चिन्ह जिसका आकार डमरू की भांति है वह है

डमरू वाला शिव। ऋषभ ने तपोस्थली पहाड़ को ढूँढा बदरीनाथ, शिव की तपस्या स्थली बदरीनाथ, ऋषभ का चिन्ह बैल (नन्दी) शिव का नन्दी, हर हर महादेव, जो देवों के देव है वह है शिव (ऋषभ)। भगवान ऋषभदेव के जन्म से पहिले का मानव अपनी इच्छाओं की पूर्ति कल्पवृक्षों द्वारा करते थे, जब समय करवट लेने लगा और पूर्ति दुर्लभ होने लगी, तब मानव को जीने की कला बतलाई, 83 लाख वर्ष गृहस्थ में रहकर संसार के सब ज्ञान मानव को दिये, उन्होंने विचार किया सब कुछ मेरे बस में है, परन्तु मृत्यु मेरे बस में नहीं, तब वह अपना राजपाट अपने पुत्र भरत को देकर ऋषभ ने संन्यास धारण किया तो इनके साथ 4000 मानवों ने भी गृह त्याग कर ऋषि(संन्यासी) हुए, ऋषभ से ही ऋषि परम्परा आरम्भ हुई, ऋषभ (शिव) से ज्ञान अर्जित किया, जिसमें समस्त ब्रह्मांड का ज्ञान, दुःख-सुख, भोग और योग, व्यापार, युद्ध कौशल की कला, रोगादि के उपचार, शल्य क्रिया, लेखन विधि ब्रह्मी भाषा समस्त ऋषियों ने ज्ञान अर्जित कर कण्ठस्थ किया जिसे श्रुतज्ञान कहा जाने लगा । इन सब ऋषियों ने समस्त विश्व में भ्रमण करते हुए मानवशैली को ज्ञान बांटा, जिन्होंने ऋषभ (शिव) को अलग-अलग नाम दिए, किसे ने दिगम्बर कहा, किसी ने केशी नाम से पुकारा, किसी ने वतरशणा, कहीं आडम और आदमबाबा कहा गया, कहीं यह पशुपतिनाथ, विश्वकर्मा एवं नीलकंठ कहा जाने लगा और संसार के भिन्न-भिन्न प्रकार से इनकी मान्यता होने लगी और इनके मन्दिर भी बनने लगे जहाँ शिवलिंग की स्थापना कर पूजा-अर्चना होने लगी, ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया, वहाँ की सभ्यताओं ने इसे

अपनाकर अपने ढंग से प्रचार किया वास्तव में सब दया, मानवता और अहिंसा पर अधारित होते हुए, समयानुसार परिवर्तन कर अपनी सभ्यता बताने लगे। मानवता समस्त धर्मों का मूल उदय ऋषभ (शिव) से ही हुआ है। संसार में दो ही जातियाँ हैं- नारी और पुरुष और एक ही धर्म है मानवता। विशेष सब समयानुसार मानसिकता की उपज है। अपनी चौथी उदासी में श्री गुरुनानकदेव जी ने मक्का जो साऊदी अरब में स्थित है की यात्रा की क्योंकि उनका शिष्य मरदाना ईस्लाम को मानने वाला था और गुरुजी के साथ वहाँ जाने की लालसा प्रकट की, जो गुरु जी ने मान ली। मक्का-मदीना में शिवलिंग मन्दिर था। जब श्री गुरुनानक देव जी भाई मरदाना के साथ मक्का गये, तो भाई मरदाना वह स्थान (कमरा) देखने के लिए गया, वहाँ उनको मौलवियों ने दिखाने से इन्कार कर दिया, भाई मरदाना ने कहा मैं तो मुस्लमान हूँ, तब उन्होंने कहा तुम्हारी आँखों पर पट्टी बांध कर जाने की आज्ञा दी जा सकती है। भाई मरदाना वापिस गुरु जी के पास आकर कहने लगा, तब गुरु जी ने कहा सतनाम का जाप कर, भाई मरदाना ने जाप आरम्भ कर दिया, मौलवी गहरीनींद में चले गये, दरवाजा खुल गया और भाई मरदाना अन्दर देखता है एक पत्थर का गोल अकार है, जो प्राचीन शिवलिंग था, सेवक थके हुए थे, कि वहीं पर सो गये और पैर काबा की तरफ थे, मौलवी आये और कहने लगे, ओ काफिर तुम्हें पता नहीं इधर मक्का-मदीना है, गुरुनानकदेव जी ने कहा- हम थके हुए थे, सो गये अब जिधर मक्का नहीं उस तरफ तू हमारे पैर कर दे, जब मौलवी ने गुरु जी के पैर पकड़ कर घुमाया तो मक्का-मदीना

घूम गया, मौलवी ने कई बार किया परन्तु मक्का-मदीना उसी तरफ घूम जाता था। मौलवी समझ गया यह कोई औलिया-फकीर है, उसने यह घटना वहाँ के सब हाजी-मौलवियों को बता दी और सब वहाँ इकट्ठे हो गये, सब गुरुनानकदेव जी के चरणों में पडकर माफी माँगने लगे। गुरु जी जब वहाँ से चलने लगे- कुछ मौलवियों ने कहा- नमाज का समय हो गया है, खड़े हो जाओ और नमाज पढो-

“पंज निवाजा, पंज वक्त, पंजा पंजे नाओ ।

पहला सच्च हलाल दोए, तीजा खैर खुदाए” ॥

पांच नमाजे है और पांच उनके नाम है, पहला सच बोलना और दूसरा धर्म की किरत कर खाना, तीसरा दान करना, चौथा अपनी नियत को साफ रखना और पांचवा परमेश्वर की सिफत सलाह करनी, इसके उपरांत नेक कामों का कलमा पढ कर मुसलमान कहलाने का हकदार होता है, बाकी सब झूठ है।

मेहर ने कहा- काफिर तू क्यों कुफर बोल रहा है, क्योंकि कोई मूसलमान ऐसा नहीं कर सकता, बता तू हिन्दू है या मूसलमान । कोई मुसलमान ऐसा नहीं करता आप हिन्दू हो या मूसलमान ? आप कहाँ से आए हैं तो यह सुनकर सतगुरु नानक ने वहाँ पर शब्द उच्चारण किया ।

पांच तत्व का पूतला नानक मेरा नाम,

हिन्दू हो तो मारिये मूसलमान भी नांया।।

तो सतगुरु नानक ने कहा कि खुदा के दरबार में बहुत पीर पैगंबर है जो हाथ जोड़कर खुदा के सामने खड़े हैं। उनकी गिनती कौन कर सकता है क्योंकि वह बेअंत है। दया मसीत यह सब एक ही है हिन्दू और मूसलमान दोनों के शरीर पांच तत्वों से ही बने हैं, आँख, कान, नाक आप सभी के एक समान हैं कोई किसी से भिन्न नहीं है सभी एक समान दिखते हैं और सभी के अंदर एक जैसी प्रक्रिया हो रही है लेकिन देश-विदेशों के भेद के कारण मूर्ख लोग पखवादी होकर एक-दूसरे से झगड़ते हैं। इनका मूर्ख लोग भेद नहीं जानते और आपस में झगड़ते रहते हैं तो सतगुरु के वचन सुनकर सभी मौजूद हाजी और काज़ी सभी सतगुरु को खुदा समझकर उनके चरणों में गिर गये और कुछ समय वहाँ ठहरने की प्रार्थना की और वहाँ पर ही रहे।

गुरुनानकदेव जी ने भाई मरदाना को बताया यहां सब भारतीय मूल के निवासी रहते थे, जो वैष्णव व आर्य (श्रेष्ठ) थे, वह ऋषभ (शिव) के ऋषि ज्ञानी पुरुषों के उपासक थे। अहिंसावादी थे, यही सब से सनातन संस्कृति है, समयानुसार यहाँ के लोगों ने अपने ढंग से परिवर्तन कर लिए इस्लाम एक इब्राहीमी धर्म है, जो प्रेषित परम्परा से निकला एकेश्वरवादी पन्थ है। परम्परानुसार इसकी अन्तिम प्रेषित की शुरुआत 7 वीं सदी के अरबी प्रायद्वीप में हुई है। इस्लाम का अर्थ है खुदा को समर्पण, इसलिए वह केवल अल्लाह को ही खुदा मानते हैं। परन्तु जो मुसलमान काबा में हज करने आते हैं, वह इस शिवलिंग को जो पानी धोने से बाहर आता है, उसके बिना उनका हज पूर्ण नहीं होता।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शिव, शंकर, हरि, जिननाम ।

ऐसे आदि जिनेश थुति, पाने को शिवधाम ॥

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव और हिंदुओं के प्रथम देव भगवान शंकर में अद्भुत समानता है। आओ हम यहां जानते हैं कि कैसे और किस तरह ऋषभदेव और भगवान शंकर में समानता है।-1.दोनों ही प्रथम कहे गए हैं अर्थात् आदिदेव।2.दोनों ही जटाधारी और दिगंबर है। भृशृहरी ने 'वैराग्य शतक' में शिव को दिगंबर लिखा है। वेदों में भी वे दिगंबर कहे गए हैं। 3.दोनों के लिए 'हर' शब्द का प्रयोग किया जाता है। आचार्य जिनसेन ने 'हर' शब्द का प्रयोग ऋषभदेव के लिए किया है। 4.दोनों को ही नाथों का नाथ आदिनाथ कहा जाता है। 5.दोनों ही कैलाशवासी है। ऋषभदेव ने कैलाश पर ही तपस्या कर कैवल्य प्राप्त किया था। 6.दोनों के ही दो प्रमुख पुत्र थे। 7.दोनों का ही संबंध नंदी बैल से है। ऋषभदेव का चरण चिन्ह बैल है। 8.शिव, पार्वती के संग है तो ऋषभ भी पार्वत्य वृत्ती के हैं।9.दोनों मयुर पिच्छिकाधारी है।10.दोनों की मान्यताओं में फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी और चतुर्दशी का महत्व है।11.शिव चंद्रांकित है तो ऋषभ भी चंद्र जैसे मुखमंडल से सुशोभित है। *हालांकि यहां यह सिद्ध करने का प्रयास नहीं किया जा रहा है कि ऋषभदेव और भगवान शिव एक ही है। यहां उनकी*

समानता के बारे में कुछ बिन्दू दिए गए हैं जिन पर विचार किए जाने की जरूरत है ।

शिव कह पूजे शैव, वैदान्ति ब्रह्मा कहते हैं।

बुद्ध, बोद्ध, जिन-जैन, वैष्णव दुःख हरि हरते हैं।

ईसा, मुस्लिम, गौड, खुदा कह बन्दगी करते हैं।

शुद्ध, बुद्ध तीर्थंकर को वन्दना करते हैं ।

एक बार हज़रत अयूब जिन के शरीर में कीड़े पड़ गये, उन्होंने अल्लाह के उन सर्वोत्कृष्ट गुणों का जिन का वर्णन कल्में में किया गया है-ऐसे कष्ट के समय भी नहीं छोड़ा, जो कीड़ा नीचे गिर जाता था, वह सावधानी से उठा कर अपने घाव पर छोड़ देते थे, इस विचार से की कीड़े को खुराक न मिलने से कहीं मर न जावे, जब उन से पूछा गया कि ऐसा क्यों ?- तो उत्तर दिया- अल्लाह (अल्लातालह) ने इनकी खुराक मेरा शरीर ही बनाया है, क्या मैं इन्हें जिलावतन (निर्वासित) करूँ ? वह अपने आप स्वस्थ हो गये।(रोजता उला सफिया)

एक मुस्लिम शायर ने लिखा है-

कबरए होशमन्द, किहों दफन जिस्में चारिन्दों पारिन्द ।

लातजालो बतुने कुम कबूरउल हैवानात्

तुम अपने पेटों को हेवानों की कबरे मत बनाओ । न तू गोस्त खा न शराब पी ।

यके सीरत नेकमरदां शनो,अगरने मरदी वा पकीजाह रूके
जहानूत

हे मनुष्य यदि तू भला आदमी और शुद्धात्मा है तो तू
भले पुरुष के गुणों को सुन ।

जब भगवान ऋषभदेव ने आयु का अन्त समय निकट
समझा तो 10,000 अन्तेवासियों के साथ अष्टापद (कैलाश
पर्वत) के शिखर पर पादपोगमन संधारा किया और प्रभु ने
निर्वाण को प्राप्त किया और सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गये। भगवान
ऋषभदेव के निर्वाण होते ही सौधर्मेन्द्र शक्र आदि 64 इन्द्रों
के सिंहासन चलायमान हुए और वे सब कैलाश पर्वत के
शिखर पर आये। देवराज शक्र की आज्ञा से देवों ने तीन
चिताएँ और तीन शिवकाओं का निर्माण किया। शक्र ने
क्षीरोदक से प्रभु के पार्थिव शरीर को और दूसरे देवों ने
गणधरों (ऋषियों) एवं अन्य अन्तवासियों के शरीर को स्नान
करवाया और गोशीर्ष चन्दन का विलेपन किया। एक चिता
पर शक्र ने प्रभु के पार्थिव शरीर को रखा और देवों ने अन्य
ऋषियों के पार्थिव शरीर को दूसरी और चिताओं पर रखा
और गोशीर्षचन्दन की काष्ठ से चुनी हुई चिताओं को अनेकों
प्रकार के सुगन्धित द्रव्य डाले और अग्रिकुमार और
वायकुमारों ने अग्नि संस्कार किया। संस्कार के बाद
मेघकुमार देवों ने क्षीरोदक से उन चिताओं को ठंडा किया।
तदुपरान्त देवराज शक्र ने भवनपतियों, वाणव्यन्तरो,
ज्योतिष् और वैमानिक देवों को सम्बोधित करते हुए कहा-
“ हे देवनुप्रियों! शीघ्रता से सर्वरत्नमय विशाल आलयो
(स्थान) वाले तीन चैत्य-स्तूपों का निर्माण करो। उनमें से

एक प्रभु ऋषभदेव की चिता पर, दूसरा ऋषियों (गणधरों) और तीसरा अन्य के लिए।” उन चार प्रकार के देवों ने चैत्यस्तूपों का निर्माण किया जो शिवलिंग कहलाए।

वैदिक परम्परा के साहित्य में माघ कृष्णा चतुर्दशी के दिन आदिदेव का शिवलिंग के रूप में उद्भव होना माना गया है। भगवान आदिनाथ के शिव-पद प्राप्ति का इससे साम्य प्रतीत होता है। यह सम्भव है कि भगवान ऋषभदेव की चितास्थल पर जो स्तूप का निर्माण किया गया वही आगे चलकर स्तूपाकार चिन्ह शिवलिंग के रूप में लोक प्रचलित हो गया।

श्रीमद्भागवत में ऋषभदेव को यज्ञपुरुष विष्णु का अंशावतार माना गया है।

“ भगवानपरमर्षिभिः प्रसादितो नाभेः प्रियचिकीर्षया तदवरोधायने मरुदेव्याँ, धर्मान्दर्शयितुकामो वातरशनानां श्रमणानामृषीणामूर्ध्वमन्थिनां शुक्लयातन्वावततारा।”

श्री मद्भागवत, 5/3/20

“ऋषभदेव के शरीर में जन्म से ही वज्र, अंकुश आदि विष्णु के चिन्ह थे।”

श्री मद्भागवत, 5/4/2

“ मेरे इस अवतार शरीर का रहस्य साधारण जनों के लिए बुद्धगम्य नहीं है। शुद्धत्व ही मेरा हृदय है और उसी में धर्म स्थिति है। मैं ने अधर्म को अपने से बहुत पीछे ढकेल दिया है, इसलिए सत्पुरुष मुझे ऋषभ कहते हैं।”

श्री मद्भागवत, 5/5/19

“तुम सम्पूर्ण चराचर भूतों को मेरा ही शरीर समझकर शुद्ध-बुद्धि से पद-पद पर इनकी सेवा करो, यह मेरी सच्ची पूजा है।”

श्री मद्भागवत,5/5/25

“केवल शरीर मात्र का परिग्रह रखा और सब कुछ घर पर रहते ही छोड़ दिया था।”

श्री मद्भागवत,5/5/28

“उन्होंने नग्रावस्था में महाप्रस्थान किया।”

श्री मद्भागवत,5/5/7

“जो स्वयं निरन्तर अनुभव होने वाले आत्मस्वरूप की प्राप्ति से सब प्रकार की तृष्णाओं से मुक्त थे, उन भगवान ऋषभदेव को नमस्कार है।”

श्री मद्भागवत,5/6/16

“शिवपुराण में शिव का आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के रूप में अवतार लेने का उल्लेख है।”

श्री मद्भागवत,5/6/119

“ऋषभदेव ने हेमवंत गिरि हिमालय (कैलास पर्वत) पर सिद्धि प्राप्त की। वे व्रतपालन में दृढ थे। वे ही निग्रन्थ, तीर्थंकर ऋषभ जैनों के आसदेव थे।”

शिवपुराण,4/47/47

“ धम्मपद में ऋषभ को सर्वश्रेष्ठ वीर कहा गया है।”

विद्वानों का यह मानना अयुक्तियुक्त नहीं है कि ऋषभदेव वेदोल्लिखित होने पर भी वेदपूर्व हैं। उसभं पवरं वीरं। धम्मपद 422

इसके अतिरिक्त मार्कण्डेय पुराण, अध्याय40, कूर्म पुराण, अध्याय40, अग्निपुराण, अध्याय10, वायु महा पुराण, पूर्वार्ध, अध्याय 33, ब्रह्माण्डपुराण, पूर्वार्ध, अनुषंगपाद अध्याय 14, वाराह पुराण, अध्याय 74, लिंग पुराण, अध्याय 47, विष्णु पुराण, द्वितीयांश अध्याय 1, स्कन्ध

पुराण, माहेश्वर खण्ड का कौमार खण्ड अध्याय 37 एवं मनुस्मृति: में उल्लेख मिलते हैं कि आदिदेव भगवान ऋषभदेव समस्त संसार के पूज्यनीय हैं। समस्त धर्मों में इनकी स्तुति एवं वन्दना की गई है।

ॐ नमोअर्हन्तो ऋषभो वा, ॐ ऋषभं पवित्रम् ।

यजुर्वेद अ 25, मंत्र 16

ऋषभ सर्वश्रेष्ठ पवित्र हैं, अरिहन्त ऋषभ को नमस्कार करता हूँ ।

ॐ त्रैलोक्यप्रतिष्ठितानां चतुर्विंशतितीथकरणम् ।

ऋषभादिवद्धर्मानान्तानां , सिद्धानां शरणं प्रपद्ये ॥

ऋग्वेद

ऋषभदेव से वर्द्धमान पर्यन्त जो चौबीस तीर्थकर तीन लोक में प्रतिष्ठत हैं, मैं उनकी शरण ग्रहण करता हूँ। उन्हें 3 अलग-अलग देवताओं के रूप में माना जाता है-ब्रह्मा-(जब उन्हें आत्मा का ब्रह्मज्ञान मिला) विष्णु- (जब वे विश्व के पहले राजा बनकर प्रजा का पालन करते थे) शिव- (जब वे विश्व के पहले तपस्वी बने) ये सभी 3 अलग-अलग नहीं लेकिन एक ही महात्मा भगवान आदिनाथ थे। बौद्धधर्म में आदिबुद्ध के रूप में भगवान आदिनाथ की ही पूजा की जाती है। वहीं भगवान आदिनाथ को 4000 साल पहले अरब में उत्पन्न हुए यहूदी धर्म (jews) में पहले पैगंबर आदिमबाबा/Adam के रूप में माना जाता है। लेकिन यहूदी धर्म में भगवान आदिनाथ के दोनो बेटे काबिल (भरत चक्रवर्ती) और हाबिल (बाहुबलि) की कहानी को एक काल्पनिक निर्माता के अस्तित्व को साबित करने के लिए दूसरे तरीके से बदल दी

गई है। लेकिन हम जैनग्रंथों में वास्तविक कहानी पढ सकते हैं। यहूदी धर्म के सभी उपदेश (commandments) जैन धर्म के मूलभूत सिद्धांतों से ही निकले हैं। यहूदी धर्म के founder इब्राहिम को पहाड़ों में साधना कर रहे एक जैन साधु ने ही आध्यात्मिक ज्ञान का उपदेश दिया था, ईसाई और मुस्लिम धर्म ने भी यहूदी धर्म की तरह तीर्थंकर आदिनाथ को ही पहला पैगंबर (prophet) आदिमबाबा /Adam माना है। विश्व के सभी धर्मों का मूल उद्भव स्रोत एक ही "तीर्थंकर आदिनाथ" ही है। यह महाभारतकाल के पश्चात की घटनाएं हैं। जैन एवं वैष्णव (भारतीय) धर्म ही विश्व धर्म हैं।

लेह, लद्दाख, चीन. तिब्बत, आफगानिस्तान, ईरान और इराक, ब्रह्मा, श्री लंका, नेपाल में बुद्ध धर्म का बहुत प्रचार हुआ। यह भी कहा जाता है कि जहाँ मक्का-मदीना है वहाँ भी वैष्णव मन्दिर था अमेरिका में अर्जुनटाईना अर्जुन के नाम से बसा था। आज भी जर्मन में संस्कृत और प्राकृत भाषा विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है और हिटलर का ध्येय था कि जो बातें हम करते हैं वह ब्रह्माण्ड में रहती है और वह भगवान कृष्ण की गीता का उपदेश जो अर्जुन को दिया वह सुनना चाहता था अपने विज्ञानिकों के माध्यम से।

यह भी सिद्ध होता है कि एक समय था जबकि संपूर्ण धरती पर सिर्फ भारतीय वैष्णव थे। मैक्सिको में एक खुदाई के दौरान गणेश और लक्ष्मी की प्राचीन मूर्तियां पाई गईं। अफ्रीका में 6 हजार वर्ष पुराना एक शिव मंदिर पाया गया

और चीन, इंडोनेशिया, मलेशिया, लाओस, जापान में हजारों वर्ष पुरानी विष्णु, राम और हनुमान की प्रतिमाएं मिलना इस बात के सबूत हैं कि भारतीय धर्म संपूर्ण धरती पर था। 'मैक्सिको' शब्द संस्कृत के 'मक्षिका' शब्द से आता है और मैक्सिको में ऐसे हजारों प्रमाण मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है। जीसस क्राइस्ट्स से बहुत पहले वहां पर भारतीय धर्म प्रचलित था- कोलंबस तो बहुत बाद में आया। सच तो यह है कि अमेरिका, विशेषकर दक्षिण-अमेरिका एक ऐसे महाद्वीप का हिस्सा था जिसमें अफ्रीका भी सम्मिलित था। भारत ठीक मध्य में था। अफ्रीका नीचे था और अमेरिका ऊपर था। वे एक बहुत ही उथले सागर से विभक्त थे। उसे पैदल चलकर पार कर सकते थे। पुराने भारतीय शास्त्रों में इसके उल्लेख हैं। वे कहते हैं कि लोग एशिया से अमेरिका पैदल ही चले जाते थे। यहां तक कि शादियां भी होती थीं। कृष्ण के प्रमुख शिष्य और महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा अर्जुन ने मैक्सिको की एक लड़की से शादी की थी। निश्चित ही वे मैक्सिको को मक्षिका कहते थे। लेकिन उसका वर्णन बिलकुल मैक्सिको जैसा ही है। मैक्सिको में भारतीयों के देवता गणेश की मूर्तियां हैं, दूसरी ओर इंग्लैंड में गणेश की मूर्ति का मिलना असंभव है। कहीं भी मिलना असंभव है, जब तक कि वह देश भारतीय धर्म के संपर्क में न आया हो, जैसे सुमात्रा, बाली और मैक्सिको में संभव है, लेकिन और कहीं नहीं, जब तक वहां भारतीय धर्म न रहा हो। मैं जो यह कुछ उल्लेख कर रहा हूं, अगर तुम इसके बारे में और अधिक जानकारी

पाना चाहते हो तो तुम्हें भिक्षु चमन लाल की पुस्तक 'हिंदू अमेरिका' देखनी पड़ेगी, जो कि उनके जीवनभर का शोधकार्य है। (स्वर्णिम बचपन : ओशो- प्रवचनमाला सत्र- 6... भारत एक सनातन)। **वैष्णव और जैन धर्म** : अब तक प्राप्त शोध के अनुसार भारतीय धर्म दुनिया का सबसे प्राचीन धर्म है, लेकिन यह कहना कि जैन धर्म की उत्पत्ति वैष्णव धर्म के बाद हुई तो यह उचित नहीं होगा। ऋग्वेद में आदिदेव ऋषभदेव का उल्लेख मिलता है।

त्रैलोक्यप्रतिष्ठितानां चतुर्विंशतितीर्थकरणम् ।

ऋषभादिवद्धर्मानान्तानां , सिद्धानां शरणं प्रपद्ये ॥ ऋग्वेद राजा जनक भी विदेही (दिगंबर) परंपरा से थे। वैदिक काल में पहले ऐसा था कि परिवार में एक व्यक्ति ब्राह्मण धर्म में दीक्षा लेता था तो दूसरा जैन। इक्ष्वाकू कुल के लोग वैष्णव भी थे और जैन भी। इस देश में दो जड़ें एक साथ विकसित हुईं। जैसे हमारे दो हाथ हैं जिसके बारे में हम कह नहीं सकते कि पहले कौन से हाथ की उत्पत्ति हुई, उसी तरह जैन पहले या वैष्णव? यह कहना अनुचित होगा।

भारतीय धर्म के बाद किस धर्म की उत्पत्ति हुई...

यहूदी धर्म : जैसे वैष्णव धर्म के बाद बहुत से प्राचीन धर्मों का उल्लेख किया जा सकता है, जैसे पेगन, वूडू आदि लेकिन वैष्णव-जैन के बाद यहूदी धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म था जिसने धर्म को एक नई व्यवस्था में ढाला और उसे एक नई दिशा और संस्कृति दी। हजरत आदम से लेकर अब्राहम और अब्राहम से लेकर मूसा तक की परंपरा यहूदी धर्म का हिस्सा

है। ये सभी कहीं न कहीं भारतीय धर्म की परंपरा से जुड़े थे। ऐसा माना जाता है कि राजा मनु को ही यहूदी लोग हज.नूह कहते थे। यहूदी धर्म के पैगंबर हजरत मूसा जानिए यहूदी धर्म की संपूर्ण जानकारी...

यहूदी धर्म के बाद कौन सा धर्म जन्मा...पारसी धर्म : यहूदी धर्म के बाद वैदिक धर्म से ही पारसी धर्म का जन्म हुआ। पारसी धर्म के स्थापक अत्री ऋषि के कुल से थे। पारसी धर्म का उदय ईसा से 700 वर्ष पूर्व पारस (ईरान) में हुआ। पारस को बाद में फारस कहा जाने लगा। फारस पर पारसियों का शासन था। यह पारसी धर्म के लोगों की मूल भूमि है। पारसी धर्म के संस्थापक है जरथुस्त्र। ईरानी लोग जो पारसी धर्म का पालन करते थे, इस्लाम के लगातार हो रहे आक्रमण को झेल नहीं पाए। 7वीं सदी में मोहम्मद बिन कासिम के आक्रमण के बाद पारसियों ने पलायन कर भारत में शरण ली। अब फारस ईरान के रूप में एक मुस्लिम राष्ट्र है।

जिन्होंने वैदिक धर्म को एक नई व्यवस्था दी...बौद्ध धर्म: यहूदी धर्म के बाद पांच सौ ई पू अस्तित्व में आया पांचवां सबसे बड़ा धर्म- बौद्ध धर्म। बौद्ध धर्म के संस्थापक थे भगवान बुद्ध। बुद्ध स्वयं भारतीय थे। बौद्ध धर्म को वैदिक धर्म का सबसे नवीनतम और शुद्ध संस्करण माना जाता था। बौद्ध काल आते-आते वैदिक धर्म बिगाड़ का शिकार हो चला था। लोग वैदिक मार्ग को छोड़कर पुराणिकों के बहुदेववादी मार्ग पर चलने लगे थे। भगवान बुद्ध ने पहली दफे धर्म को एक वैज्ञानिक व्यवस्था दी और समाज को एकजुट किया,

लेकिन शंकराचार्य के बाद वैष्णवों का बौद्ध धर्म में दीक्षा लेना रुक गया।

बौद्ध धर्म के बाद इस धर्म ने शुरू किया धर्म के लिए युद्ध...ईसाई धर्म : बौद्ध धर्म के बाद आज से 2 हजार वर्ष पूर्व ईसाई धर्म की शुरुआत की ईसा मसीह से। ईसाई धर्म से पूर्व कोई भी धर्म किसी दूसरे धर्म के प्रति हिंसक नहीं था लेकिन ईसाई धर्म ने दुनिया को धर्म के लिए क्रूसेड करना सिखाया। इतिहास गवाह है कि दुनिया भर में क्रूसेडर्स ने निर्मम तरीके से दूसरे धर्म के लोगों की हत्या कर ईसाई धर्म को दुनिया भर में जबरन फैलाया। शुरुआत में जीसस क्राइस्ट के 12 शिष्यों ने इस धर्म का प्रचार-प्रसार किया। बाद में यह धर्म जब स्थापित हो गया तो इसे इसके अनुयायियों ने युद्ध और क्रूसेड के दम पर दुनिया भर में फैलाया। क्राइस्ट के शिष्यों और बाद के ईसाइयों ने ईसाई धर्म को संगठित कर उसे चर्च के अधीन बनाया। इसके लिए उन्होंने बहुत कुछ यहूदी और बौद्ध धर्म से ग्रहण किया।

ईसाई धर्म के बाद इस धर्म के जन्म ने बदल दिया दुनिया का नक्शा...इस्लाम : ईसाई धर्म के बाद आज से 1400 वर्ष पूर्व यानी छठी सदी में इस्लाम धर्म की स्थापना हुई। ह. मोहम्मद ने इस धर्म की शुरुआत की और देखते ही देखते यह धर्म मात्र 100 वर्ष में पूरे अरब का धर्म बन गया। विद्वान लोग इसे पूरी तरह से यहूदी-वैदिक धर्म का मिला-जुला रूप मानते हैं। हजरत मोहम्मद से पहले अरब में धर्म के मनमाने रूप प्रचलित हो चले थे और धर्म पूरी तरह से बिगाड़ का शिकार था। हजरत मोहम्मद ने धर्म को एक नई व्यवस्था दी

ताकि लोग धर्म का अच्छे से पालन कर सकें और सामाजिक अनुशासन में रहें। अंत में जन्मा योद्धाओं का धर्म...सिख धर्म: जब अरब, तुर्क और ईरान के कारण वैष्णव धर्म खतरे में था, चारों ओर युद्ध चल रहा था ऐसे में गुरु नानकदेवजी ने आकर लोगों में भाईचारे और विश्वास का माहौल बनाया। उनका जन्म कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन 1469 को राएभोए की तलवंडी नामक स्थान में हुआ था। तलवंडी को ही अब नानक के नाम पर ननकाना साहब कहा जाता है, जो कि अब पाकिस्तान में है। सिख परंपरा में दस गुरुओं ने मिलकर सिख धर्म को मजबूत किया। अंतिम गुरु गुरुगोविंद सिंहजी ने सिख धर्म को विश्व का सबसे शक्तिशाली धर्म बनाया। तो ये थे वह धर्म जिनके नाम से सभी लोग परिचित हैं। वैदिक, जैन, यहूदी, पारसी, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम और सिख धर्म। लेकिन इन प्रमुख धर्मों के अलावा भी धरती पर और भी कई धर्म थे जिनके बारे में कम ही लोग जानते हैं। ये धर्म हैं आज भी अस्तित्व में...शिंतो धर्म: जापान के शिंतो धर्म की ज्यादातर बातें बौद्ध धर्म से ली गई थीं फिर भी इस धर्म ने अपनी एक अलग पहचान कायम की थी। इस धर्म में कालांतर में प्राकृतिक शक्तियों, महान व्यक्तियों, पूर्वजों तथा सम्राटों की भी उपासना की जाती थी, किंतु बौद्ध धर्म के प्रभाव से सारी रूढ़ियाँ छूट गईं लेकिन 1868-1912 में शिंतो धर्म ने बौद्ध विचारों से स्वतंत्र होकर अपने धार्मिक मूल्यों की पुनः व्याख्या और स्थापना कर इसे जापान का

'राजधर्म' बना दिया गया। ...जेन धर्म : जेन (zen) को झेन भी कहा जाता है। यह सम्प्रदाय जापान के सेमुराई वर्ग का धर्म है। जेन का विकास चीन में लगभग 500 ईस्वी में हुआ। चीन से यह 1200 ईस्वी में जापान में फैला। प्रारंभ में जापान में बौद्ध धर्म का कोई संप्रदाय नहीं था किंतु धीरे-धीरे वह बारह सम्प्रदायों में बँट गया जिसमें जेन भी एक था। हालांकि चीन में लाओत्से और कन्फशियस की विचारधारा भी थी आदिवासियों के धर्म...पेगन धर्म: पेगन धर्म को मानने वालों को जर्मन के हिथ मूल का माना जाता है, लेकिन ये रोम, अरब और अन्य इलाकों में भी बहुतायत में थे, हालाँकि इसका विस्तार यूरोप में ही ज्यादा था। एक मान्यता अनुसार यह अरब के मुशरिकों के धर्म की तरह था और इसका प्रचार-प्रसार अरब में भी काफी फैल चुका था। यह धर्म ईसाई धर्म के पूर्व अस्तित्व में था।

जानें वूडू धर्म को: वूडू... इसे आप कोई भी नाम दे सकते हैं, क्योंकि यह दुनियाभर की आदिम जातियों, आदिवासियों का प्रारंभिक धर्म रहा है। इस तरह की परंपरा को अंग्रेजी में टेबू कह सकते हैं। यह आज भी दुनियाभर में जिंदा है। नाम कुछ भी हो, पर इसे आप आदिम धर्म कह सकते हैं। इसे लगभग 6,000 वर्ष से भी ज्यादा पुराना धर्म माना जाता है।

इस्लाम से पहले अरब में कौन सा धर्म था प्रचलित...मुशरिकों का धर्म : 600 ईसा पूर्व ईस्वी से पूर्व इस्लाम से पहले अरब में तीन परंपरा प्रचलन में थी। एक

अरब का पुराना धर्म जिसे दीने इब्राहीमी कहा जाता था। यह इब्राहीमी धर्म ही बिगाड़ का शिकार होकर मुशरिकों का धर्म बन चुका था। दूसरा यहूदी धर्म और तीसरा ईसाई धर्म। मुशरिकों में से कुछ मुसलमान बन गए और कुछ जंग में मारे गए। इस्लाम की लड़ाई जहां मुशरिकों से थे वहीं यहूदी और ईसाइयों से भी थी। इस कश्मकश में इस्लाम जीतता गया। मुशरिक अपने पूर्वजों और योद्धाओं की कब्रों की पूजा करते थे और उनसे आशीर्वाद मांगते थे। मुशरिक काबा को अपना इबादतगाह मानते थे। काबा में 300 से ज्यादा मूर्तियां रखी थीं और उसके आसपास कब्रें थीं। यहूदी भी यहीं पूजा करते थे। मुशरिक बहुदेववादी और मूर्तिपूजक थे। बहुत से विद्वान मानते हैं कि ये सभी वैदिक थे व इनका समाज मुशरिक था, लेकिन वैष्णव विद्वान इस बात से इत्तेफाक रखते हैं। इस पर विवाद हैं। मुशरिक का अर्थ होता है ईश्वर को छोड़कर या ईश्वर के अतिरिक्त अन्य को पूजने वाला बहुदेववादी। वैदिक तो एकेश्वरवादी धर्म है। इराक और सीरिया में सुबी नाम से एक जाति है यही साबिईन है। इन साबिईन को अरब के लोग वैदिक मानते थे। साबिईन अर्थात् नूह की कौम। भारतीय मूल के लोग बहुत बड़ी संख्या में यमन में आबाद थे, जहां आज भी श्याम और वैष्णव नामक किले मौजूद हैं। इस्लाम ने जब अरब से बाहर कदम रखा तो उनका पहला सामना पारसी धर्म के लोगों से हुआ। उन्होंने पारसी धर्म के लोगों को ईरान से खदेड़ दिया उसी तरह जिस तरह की अफगानिस्तान और पाकिस्तान से वैष्णव, जैन और बौद्धों को खदेड़ दिया।

वैष्णव धर्म की प्राचीनता के प्रमाण...जब हम इतिहास की बात करते हैं तो वेदों की रचना किसी एक काल में नहीं हुई। विद्वानों ने वेदों के रचनाकाल की शुरुआत 4500 ई.पू. से मानी है अर्थात् ये धीरे-धीरे रचे गए और अंततः कृष्ण के समय में वेदव्यास द्वारा पूरी तरह से वेद को चार भागों में विभाजित कर दिया गया । लिखित रूप में आज से 6508 वर्ष पूर्व पुराने हैं वेद। यह भी तथ्य नहीं नकारा जा सकता कि कृष्ण के आज से 5500 वर्ष पूर्व होने के तथ्य ढूंढ लिए गए। वैदिक और जैन धर्म की उत्पत्ति पूर्व आर्यों की अवधारणा में है, जो 4500 ई.पू. (आज से 6500 वर्ष पूर्व) मध्य एशिया से हिमालय तक फैले थे। कहते हैं कि आर्यों की ही एक शाखा ने पारसी धर्म की स्थापना भी की। इसके बाद क्रमशः यहूदी धर्म 2 हजार ई.पू., बौद्ध धर्म 500 ई.पू., ईसाई धर्म सिर्फ 2000 वर्ष पूर्व, इस्लाम धर्म 1400 साल पहले हुए। लेकिन धार्मिक साहित्य अनुसार वैदिक धर्म की कुछ और धारणाएं भी हैं। मान्यता यह भी है कि 90 हजार वर्ष पूर्व इसकी शुरुआत हुई थी। जवाहरलाल नेहरू कि 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' और रामशरण उपाध्याय की किताब 'बृहत्तर भारत ' में हिंदू धर्म और भारत के इतिहास के बारे में विस्तार से मिल सकता है ।

वास्तव में आर्य भारतीय थे, आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ, यह उत्तरी भारत में फैले हुए थे, यह सभी द्राविड थे और जैन धर्मानुयायी थे। जब आक्रमण हुए तो यह दक्षिण भारत में चले गये। कुछ आर्य विदेशों में व्यापार करते थे,

जब इस्लाम का बोलबाला हुआ तो वह सब वापिस भारत आ गये। कुछ विदेशी इतिहासकार कहते हैं कि यह सब सिन्धु घाटी की सभ्यता है और विदेशी विशेषकर पारसी स को ह बोलते थे, यह भी उचित नहीं, यदि वह स को ह बोलते तो संस्कृत को हंकृत बोलते।

जब विस्तारवाद का युग आरम्भ हुआ तो सर्वप्रथम भारत में कुछ धर्माचार्यों ने जैन और बोद्ध पर आक्रमण करने शुरु किये, बोद्ध धर्म तो सम्राट आशोक ने विदेशों में दूर-दूर तक फैलाया था परन्तु भारत में नागण्य हो गया।

उस समय भारत सोने की चिड़िया कहलाता था और महावीर निर्वाण के 200-250 वर्ष के बाद विदेशियों ने आक्रमण करने आरम्भ कर दिए और भारत को लूटने लगे, जिसमें सबसे पहिले सिकन्दर महान आया और भारतियों के शौर्य के आगे नतमस्तक होकर जैनमुनि कल्याण ऋषि से भेंट हुई और उनके प्रभाव से वापिस जाने का मन बना लिया और अपना गुरु मान कर जैनमुनि कल्याण ऋषि को साथ ले गये, वह बात अलग है कि सिकन्दर की रास्ते में ही मृत्यु हो गई। जैनमुनि कल्याण ऋषि वहाँ जाकर कलवायस नाम से प्रसिद्ध हुए।

चन्द्रगुप्त के बाद बिम्बसार (श्रेणिक), आशोक, कुणाल और सम्प्रति जो ईसा के छटी शताब्दी तक सब ने जैन धर्म का विस्तार भारत में ही नहीं अपितु वर्तमान पाकिस्तान, अफगानिस्तान, युनान, ईरान, तिब्बत, कुछ भाग चीन का, ब्रह्मा और लंका तक का किया । सम्राट आशोक कुछ समय

बाद बुद्ध धर्म का अनुयायी हो गया। आशोक के बेटे सम्प्रति ने जैन धर्म को विशाल धर्म बनाया और 1,25,000 जैन मन्दिरों का निर्माण करवाया। महाराजा चन्द्रगुप्त जैन धर्म में दीक्षित होने वाले अन्तिम राजा थे। इन के बाद कोई राजा जैन धर्म में दीक्षित नहीं हुए और इन सब ने ब्राह्मण संस्कृति को कोई अधिक सम्मान नहीं दिया। चन्द्रगुप्त अपने गुरु के साथ अन्तिम समय चन्द्रगिरि पर्वत पर गये और वहां समाधि ली। अब प्रश्न उठता है इतना विशाल धर्म आज अल्पसंख्यक क्यों ?

तब ब्राह्मण समाज के विद्वानों (रामानुज और शंकराचार्य) जो ईसा की छठी शताब्दी का अन्त एवं सातवीं शताब्दी में कलयुग के षडयन्त्र से जैनों पर अत्यन्त प्रभावी विनाश लीला रची और एक ही दिन में 8000 जैन सन्तों को मौत के घाट उतार दिया, जिसका इतिहास मिनाक्षी मन्दिर के कमल सरोवर में उपलब्ध है, जो आजकल वर्जित किया गया है और एक हजार मन्दिर ध्वस्त कर दिया और बड़े बड़े मन्दिरों के नाम बदल कर मीनाक्षी मन्दिर, कपलेश्वर, तिरुपतिबाला जी कर दिये गये और धर्म परिवर्तन करवाया गया। फिर मुगलों ने जैन विरास्त को नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, यहाँ तक कि जो आज कुतबमीनार है वह भी कभी जैन मन्दिर होता था। एक बात तो स्पष्ट है इन मन्दिरों के नाम चाहे बदले गये परन्तु मूर्तियाँ जैन तीर्थंकरों की हैं जिन की अर्चना होती है तिरुपतिबाला जी नेमनाथ

भगवान की खड़ी दिगम्बर मूर्ति जिसको वस्त्र और गहनों से ढांप दिया जाता है।

आज हम अल्पसंख्यक जरूर है परन्तु आज पूरा विश्व आहिंसा को समझता है। “विश्व कटुम्बम” है तो चाहे ऋषभ कहो या शिव कहो हमें उनके आदर्शों की अति आवश्यकता है। धर्म में राजनीति नहीं होनी चाहिए अपितु राजनीति में धार्मिक आदर्शों की आवश्यकता है। हिन्दुत्व का अर्थ है सर्वे भवन्तु सुखिनः एवं जीओ और जीने दो, अब भारत एक लोकतन्त्र देश है, सब भारतीय भूमि पर जन्म लेने वाले राजधर्म का पालन करते हुए सर्व धर्म सम्मान की नीति से एक-दूसरे को समझें और जहाँ से भी कल्याणक शिक्षा मिले ग्रहण कर अपने देश को विश्व-व्यापी बनाने में अपना योगदान दें। धर्म परिवर्तन नहीं अपितु हृदय परिवर्तन की आवश्यकता है।

अल्लाह ईश्वर तेरा नाम, सब को सन्मति दे भगवान।

मान लो एक बाप के चार बेटे हैं, कोई डॉक्टर, वकील, इंजीनयर और प्रोफैसर हैं, सब विद्वान-ज्ञानी और सब की विचारधारा और व्यवसाय भिन्न होने से परिवार अलग नहीं होते, आगे जब उनका परिवार बढ़ता जाएगा वैसे ही विचार और कार्य भिन्न-भिन्न होते जाएंगे, ऐसे ही हमारी भारतीय सभ्यता है, मूल एक ही है आदिनाथ ऋषभदेव एवं आदिनाथ शिव।

महाभारत का युद्ध चल रहा है, कौरवों और पाण्डवों में भीषण संहार हो रहा है। कर्ण पाण्डवों की सेना का मलियामेट कर रहा है कि धर्मराज युधिष्ठिर कर्ण के सामने आ जाते हैं, कर्ण युधिष्ठिर को घायल कर देता है और युधिष्ठिर

अपना रथ निकाल कर अपने शिविर को चला जाता है कि भीम देख रहा होता है और कर्ण के सामने आ डटा। भीषण युद्ध चल रहा होता है अर्जुन तीव्रगति से वीरता पूर्वक युद्ध कर रहे थे, उन्हें देखकर कर्ण ने पाण्डव सेना पर भयंकर युद्ध छेड़ दिया। अर्जुन ने सुशमा को मार गिराया और दुर्योधन के छः भाई भी मारे गये, तब अर्जुन ने भीम को युद्ध करते देखा तो भीम की तरफ आ गया देखा धर्मराज नहीं है, भीम से पूछा- भीम ने युद्ध करते हुए कहा कि धर्मराज घायल होकर शिविर में चले गये हैं। अर्जुन ने अपना रथ धर्मराज के शिविर की ओर कर लिया और शिविर में पहुँच गये, धर्मराज ने समझा कि कर्ण को मार कर सूचना देने आये हैं। धर्मराज- कर्ण मारा गया, अर्जुन नहीं। धर्मराज उत्तेजित हो गया और अर्जुन को कुछ भला-बुरा कह दिया, लानत है तेरे गाण्डिव पर, अर्जुन ने शपथ ले रखी थी कि जो मेरे गाण्डिव को कुछ कहेगा, मैं उसका सिर कलम कर दूँगा। अर्जुन हड़बड़ाकर तलवार म्यान से निकाल कर धर्मराज पर प्रहार करने लगा कि श्री कृष्ण ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहने लगे-क्यों बुद्धिहीन हो गया है, धर्मराज को मार कर तूँ जिन्दा रह सकेगा। अर्जुन-केशव मैंने कसम खाई हुई है, कि मैं अपने गाण्डिव के विरुद्ध कुछ सहन नहीं कर सकता, यह मेरा क्षत्रिय धर्म है। क्या करूँ मेरी बुद्धि नीच हो गई थी, अब मुझे अपनी गलती पर जिन्दा रहने का कोई अधिकार नहीं, मुझे अपना ही वध करना होगा, यह कह कर तलवार से अपने गले पर वार करने लगा कि श्री कृष्ण ने फिर हाथ पकड़ कर रोक दिया, किसी महान पुरुष को कुछ अभद्र कहना ही हत्या है, तब

अर्जुन कृष्ण के पाँव पड़ गया, तुमने अनर्थ होने से बचा लिया। इससे धर्मराज युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न हुए, अर्जुन – तुम्हारा विचार अनुकूल था, मैं अपनी गर्दन करता हूँ, अपना क्षत्रिय धर्म निभाओ, महाराज श्री कृष्ण ने दोनों को गले लगा कर शांत किया और हिंसा को दया में परिवर्तित कर दिया। महापुरुषों की संगत से हिंसा समाप्त हो जाती है और दया धर्म का उदय होता है। जब अर्जुन जैसे ज्ञानी महापुरुष धर्म के नाम पर धर्मराज युधिष्ठिर के वध लिए तलवार म्यान से निकाल लेते हैं, तो आजकल की दुनिया को क्या कह सकते हैं? जैन दर्शन तो हिंसा को और भी सूक्ष्म देखता है, यदि कोई हिंसा करता है, या करवाता है एवं करने वाले का गुणगान करता है तो भी हिंसा होती है। हिंसा को रोकना ही, दया है। हिंसा को रोकना ही भगवान ऋषभ एवं शिव की उपासना है।

कुछ विदेशी एवं स्वदेशी इतिहासकार जैन धर्म पर अपने विचार इस प्रकार रखते हैं-

२१ वीं शताब्दी का धर्म होगा : जैन धर्म !* __लेखक : श्री

मुजफ्फर हुसैन, मुंबई !

हम जैन दर्शन के आधार पर यह कहना चाहेंगे कि २१ वीं शताब्दी का धर्म जैन धर्म होगा ! अभी विश्वभर में महामारी का प्रकोप चल रहा है, पहली लहर कुछ कम हुई थी कि दूसरी लहर उससे भी घातक सिद्ध हो रही है, परन्तु अभी तक कोई सफल औषध नहीं बनी, जो इसे रोक सके। सतर्कता के लिए वैक्सिनेशन चल रही है और भयंकर युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। जिससे भीषण तबाही की अशंका है। दुनिया फिर जैनधर्म के सिद्धांत अहिंसा पर आएगी। इसकी

कल्पना किसी सामान्य आदमी ने नहीं की है बल्कि ज्योर्ज बर्नार्ड शा ने कहा है कि यदि मेरा दूसरा जन्म हो तो मैं जैन धर्म में पैदा होना चाहता हूँ ।

रेवरेंड तो यहाँ तक कहता हैं कि दुनिया का पहला मजहब जैन था । और अंतिम मजहब भी जैन होगा । बाल्ट यू एस एस के दार्शनिक मोराइस का तो यहां तक कहना है कि यदि जैन धर्म को दुनिया ने सहीं ढंग से अपनाया होता तो यह दुनिया और भी बड़ी खूबसूरत होती ।

जैन धर्म.... धर्म नहीं जीने का दर्शन है । सरल भाषा में मैं कहूँ तो यह खुला विश्वविद्यालय है । आपको जीवन का जो पहलू चाहिए वह यहाँ मिल जाएगा । दर्शन ही नहीं बल्कि संस्कृति, कला, संगीत एवं भाषा का यह अद्भूत संगम है। जैन तीर्थकरों ने संस्कृत को अपनाकर पाली और प्राकृत, अर्ध-मागधी, को अपनाया क्योंकि वे जैन दर्शन को विद्वानों तक सीमित नहीं रखना चाहते थे, बल्कि सामान्य आदमी तक पहुँचे और उसके जीवन का कल्याण करें । दुनिया के सभी धर्मों ने अपने चिन्ह तय किए हैं । इसमें कुछ हथियारों के रूप में है तो कुछ आकाश में चमकने वाले चाँद - सूरज के रूप में है ! २४ तीर्थकरों में से एक भी तीर्थकर ऐसा नहीं दिखलाई पड़ता जिनके पास धनुष हो, बाण हो, गदा हो अथवा त्रिशूल हो । हथियारों से लैस, दुनिया का राजा अपनी शानो शौकत से अपना दबदबा बनाए रखने में अपनी महानता समझते थे, लेकिन यहाँ तो ईश्वर के बनाए हुए पशु पक्षी अथवा जलचर प्राणी उनके साथ है ।

इंसान ने सुविधा के लिए घोड़े, हाथी, गरूड , मोर और न जाने किन-किन को अपनी 'सवारी' बनाया लेकिन जैन तीर्थंकर तो किसी को कष्ट नहीं देना चाहते हैं। वे अपने पाँव के बल पर सारी दुनिया को लांघते हैं और प्रकृति के भेद को जानने की कोशिश करते हैं। रहने को घर नहीं, खाने को कोई स्थाई व्यवस्था नहीं लेकिन फिर भी दुनिया के कष्टों का निवारण करने के लिए अपनी साधना में कोई कमी नहीं आने देते हैं। हर वाद ने व्यक्ति को छोटा कर दिया है ! लेकिन हम देखते हैं कि जैन धर्म में जैन विचार ने मनुष्य को सबसे महान बना दिया है। दुनिया के अन्य धर्म मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाकर उसे जीवन यापन करने के लिए लाचार बना देते हैं लेकिन यहां तो जैन धर्म में मनुष्य की अपनी स्वतंत्रता सर्वोपरि है।

जैन दर्शन में हिंसा पराजित करने में तीन 'अ' का महत्व है। ये हैं अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रह। तीनों एक दूसरे से जुड़े हैं। वे अलग नहीं हो सकते। भारत में न जीत सकने वाला सिकंदर जब एथेंस लौट रहा था तो उससे एक जैन साधु ने कहा था कि दुनिया को जीतने वाले काश तुम अपने आप को जीत सकते ! जैन साधु को सिकंदर अपने साथ एथेंस ले गए थे।

जैन साधु कल्याण मुनि सिकंदर के बाद ही एथेंस में वर्षों तक लोगों को अहिंसा का संदेश देते रहे। एथेंस में सब कुछ बदल गया, लेकिन आज भी वहाँ उस जैन साधु की प्रतिमा लगी हुई है।

प्लेटो और एरिस्टोटल एथेंस से इतना प्रभावित हुआ कि पाइथागोरस जैसा महान गणितज्ञ यह कहने लगा कि मैं जैन धर्म का फैन हो गया हूँ।

२१ वी शताब्दी पानी के संकट की शताब्दी बनने वाली है। जैन मुनि तो कम पानी पीकर अपना काम चला लेते हैं, लेकिन हम जैसे लोग क्या करेंगे ? उनका मूल मंत्र है शाकाहार !

२१ वी शताब्दी में नारी स्वतंत्रता की बात की जाती है ! जैन धर्म में झांक कर देखो तो जैन साध्वियों को कितना बड़ा सम्मान मिलता है। वे पूजनीय हैं। धर्म को पढ़ाती हैं, सिखलाती हैं। दासी और भोगिनी को साध्वी बना देने का चमत्कार केवल जैन धर्म ने किया है समानता और स्वतंत्रता के साथ उनका स्वाभिमान स्थापित किया है। जैन धर्म का भेदविज्ञान को साध्वी बना देने का चमत्कार केवल जैन धर्म ने किया है। समानता और स्वतंत्रता के साथ उनका स्वाभिमान स्थापित किया है। जैन धर्म का भेदविज्ञान आत्मा और शरीर को अलग कर देने वाला बहुत पुराना विज्ञान है। आत्मा ही तो एटम है। और समस्त दुनिया में शक्ति का संचार करती है।

यदि आप अध्यात्म के आधार पर इसका विचार करते हैं तो फिर आपको जैन दर्शन की ओर लौटना पड़ेगा। नागरिकता और राष्ट्रीयता इन दिनों हर देश के मानव का आधार है। लेकिन जब तक समानता और स्वतंत्रता नहीं मिलती यह शब्द खोखले मालूम पड़ते हैं। मनुष्य के कष्टों का निवारण अंतर्राष्ट्रीय आधार पर उसका उद्धार केवल

अनेकांतमयी जैन दर्शन के माध्यम से ही संभव है, जो भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ-शिव) से हमें प्राप्त हुआ।

जय ऋषभ- जय शिव । जैनम् जयति शासनम्।
स्वतन्त्र जैन जलन्धर

c/o Archana-Rajesh jain

86, Kartar Avenue, Haibowal, Ludhiana.

8.4.2021